विस्तार पत्रक - NRCC/2017-3

ऊँट सम्बंधित उपयोगी जानकारी प्राप्त करने के माध्यम

श्याम सिंह दहिया, शरत चंद्र मेहता, शिरीष नारनवरे, राघवेन्द्र सिंह

ऊँट मरुभूमि में रहने वाले लोगों के निजी, सामाजिक व आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ऊँट उत्पादों के द्वारा ऊँट–पालक अपनी व देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। आम दिनचर्या व कृषि में मशीनीकरण के बढ़ते प्रचलन, बढ़ती मानव–जनसंख्या, आर्थिक सहायता का अभाव इत्यादि कारणों से ऊँट व ऊँट–पालकों की संख्या में बहुत तेजी से गिरावट आई है। कई सालों पहले ऊँट–पालक अपनी रूढ़िवादी–मान्यताओं की वजह से ऊँट–उत्पादों विशेष कर ऊँट–दूध के व्यवसाय के खिलाफ थे किन्तु पिछले कुछ सालों में ऊँट–दूध की स्वास्थ्य–लाभकारी जानकारी व इससे होने वाले आर्थिक फायदे के बारें में जो जानकारी व तथ्य उजागर हुए हैं उनसे प्रेरित होकर ऊँट–पालकों ने ऊँट–उत्पाद खासकर ऊँट के दूध में विशेष रूचि दिखाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि हमें ऊँट–पालन व्यवसाय को बढावा देना है तो इसके लिए हमें आम आदमी तक इससे होने वाले फायदों को पहुचाना होगा। आम आदमी तक इन फायदों को पहुँचाने के बहुत सारे माध्यम हो सकते हैं, जिनके बारे में हम विस्तार से जानेंगे।

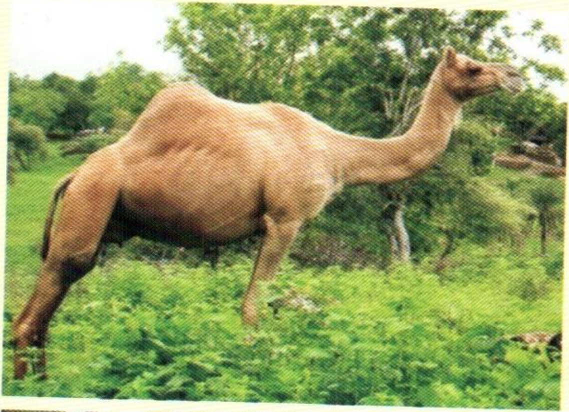

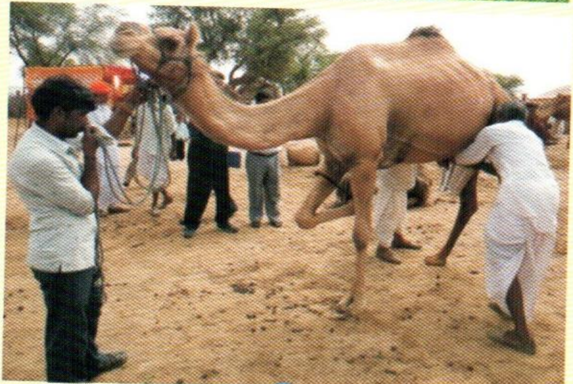

हम किसी भी प्रकार की सूचना (चाहे वह स्वास्थ्य अथवा व्यवसाय से सम्बंधित हो) को निम्नलिखित माध्यमों से ऊँट–पालकों तक पहुंचा सकते हैं :

1. <u>रेडियो / ट्रांसिस्टर</u> किसी भी जानकारी को प्रसारित करने का एक पुराना किन्तु बहुत ही सरल व उपयोगी साधन होने के साथ–साथ बड़ी आसानी से कही भी ले जाया जा सकता है। जैसा कि प्रायः ऊँट–पालक अपने ऊँटों के टोलों को लेकर कई–कई दिनों के लिए पहाड़ अथवा अन्य दुर्गम स्थानों (जहाँ पर मनोरंजन व जानकारियों के अन्य साधनों का अभाव होता है) पर चले जाते हैं, ऐसे स्थानों पर भी रेडिओ / ट्रांसिस्टर अपनी उपयोगिता को सार्थक करता हैं, हालांकि इसमें जानकारी को देखने का अभाव है लेकिन जहाँ इसकी कीमत अन्य माध्यमों की अपेक्षा कम है वहीं यह अधिकतम लोगों तक व दूर–दराज के क्षेत्रों तक अपनी बात पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम हैं। हाल ही में उष्ट्र अनुसन्धान केंद्र द्वारा आकाशवाणी पर "ऊंटा री बातां" नामक एक रेडियो कार्यक्रम खास ऊँटो से सम्बंधित जानकारियां किसानो तक पहुँचाने के लिए शुरू किया गया है। इसे किसानों की तरफ से मिलने वाली अच्छी प्रतिक्रिया के कारण यह साबित होता है कि आज भी रेडियो की उपयोगिता गांवों में बरकरार है।

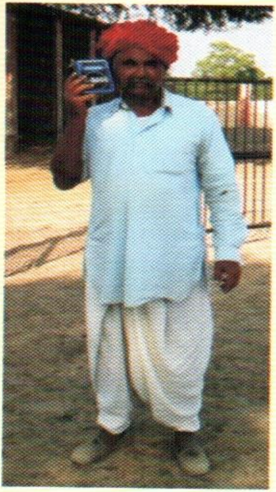

2. टेलिविजन भी रेडिओ की तरह ही एक सार्थक माध्यम है व इसमें जानकारी को सुनने के साथ–साथ देखने की भी सुविधा होने से श्रोताओं पर जानकारी का प्रभाव ज्यादा कारगर रूप में पड़ता है। जहाँ टेलिविजन पर श्रोता अपनी रूचिनुसार विभिन्न प्रकार के चैनल देख व सुन सकते हैं वहीं इसका रख–रखाव भी बहुत आसान व आर्थिक रूप से सुविधाजनक हैं। हालांकि नए प्रचार–प्रसार साधनों जैसे डी. वी.डी. प्लेयर, इन्टरनेट, आदि (जिनमें विज्ञापनों का हस्तक्षेप नहीं के बराबर होता हैं) के आने से श्रोताओं खाास कर युवा

वर्ग का रूझान टेलिविजन से विमुख हुआ है फिर भी सूचनाओं के प्रसारण में टेलिविजन की अपनी एक महत्वपूर्ण पहचान हैं। अभी हाल ही में भारत सरकार द्वारा डीडी किसान नामक चैनल जो कि खास किसानों के लिए शुरू किया गया है, जिसमें खेती व पशुपालन सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जाती है।

लेखन–सामग्री द्वारा जैसे पोस्टर, पत्रिकाएँ या फिर अखबार इत्यादि के माध्यम से भी ऊँट–पालकों को लाभकारी व महत्वपूर्ण जानकारी दी जा सकती है। लेखन द्वारा जानकारी देने के लिए समय थोड़ा ज्यादा लगता है व ऊँट–पालक का साक्षर होना भी अनिवार्य हैं लेकिन इस तरह की जानकारी को भविष्य में भी सन्दर्भ–सहायता के लिए प्रयोग में लिया जा सकता है।

1. **अखबार** किसी भी जानकारी को श्रोताओं/उपभोक्ताओं तक पहुँचाने का अपने आप में एक सस्ता, ऊर्जा–स्त्रोत से आत्म–निर्भर व प्रभावकारी माध्यम हैं। इसमें टेलिविजन की तरह विज्ञापन किसी भी जानकारी के बीच में न होने से व विभिन्न प्रकार की जानकारी जैसे व्यापार, खेल–कूद इत्यादि अलग–अलग खण्डों में विभाजित होने से पाठकों की रुचि बनी रहती हैं। युवा वर्ग में टेलिविजन व इन्टरनेट की अपेक्षा अखबार की लोकप्रियता कम है व एक बार पढ़ लेने के बाद किसी अन्य नयी जानकारी हेतु इसकी उपयोगिता नष्ट हो जाती हैं।

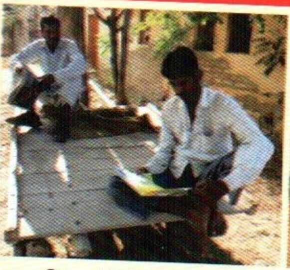

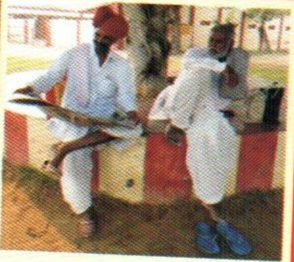

2. **<u>पत्रिकाएँ</u>** किसी विशेष समुदाय अथवा समूह की किसी विशिष्ट रुचि को लक्ष्य करने का एक अच्छा माध्यम है। ऊँट–पालकों की विशेष समस्याएं जैसे कि ऊँटों के पोषण, प्रजनन, बीमारियों इत्यादि से सम्बंधित पत्रिकाएँ, जानकारी पहुँचाने का एक अच्छा माध्यम हो सकती हैं। पत्रिकाओं में जानकारी आवश्यकतानुसार किसी समय अथवा मौसम को ध्यान में रखते हुए दी जा सकती हैं। पत्रिकाओं का एक यह भी फायदा है कि इसकी जानकारी को कभी भी उपयुक्तता अनुसार बार–बार प्रयोग में लाया जा सकता है।

3. **<u>पोस्टर</u>** अथवा सूचना–पत्रक भी ऊँट–पालकों को उपयोगी जानकारी देने का एक रोचक माध्यम है। इसमें वर्णित चित्र अपने आप में ही किसी जानकारी को बताने में समर्थ होते हैं और इनमें लिखित सामग्री कम होने की वजह से अशिक्षित ऊँट–पालक भी इसकी जानकारी का लाभ उठा सकते हैं।

<u>गोष्ठी</u>–आयोजन किसी भी जानकारी को जन–सामान्य तक सबसे प्रभावशाली रूप में पहुँचाने का सबसे कारगर जरिया है। किसी भी गोष्ठी का एक विशेष फायदा यह है कि अपने ऊँट–पालक विषय–विशेषज्ञों से सीधे जुड़ सकते हैं व अपनी समस्याओं के निदान सम्बन्धी जानकारी तुरंत ही प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि गोष्ठी–आयोजन हर जगह नहीं किया जा सकता व असामान्य हालातों में इसमें वाद–विवाद की सम्भावना भी बनी रहती है।

<u>प्रोजेक्टर द्वारा प्रदर्शन</u> किसी भी गोष्ठी अथवा सम्मलेन में प्रोजेक्टर द्वारा किया गया प्रदर्शन श्रोताओं के लिए बहुत ही लाभकारी होता है। इसमें श्रोताओं को वक्ता द्वारा दी गयी

जानकारी को देखने व सुनने से उन्हें जानकारी समझने में काफी आसानी होती है।

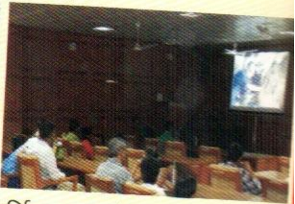

आधुनिक समय में उपरोक्त वर्णित माध्यमों के अलावा भी इन्टरनेट (ई–मेल, फेसबुक), फोन (इन्टरनेट फोन, वाट्सएप), फैक्स इत्यादि माध्यम खासे लोकप्रिय व प्रचलित हैं :

1) **इन्टरनेट** ने सूचना प्रसारण के क्षेत्र में क्रांति ला दी हैं। इसके जरिये बड़ी ही आसानी से व कई सारे लोगों को सूचना बड़ी सरलता व तुरंत–प्रभाव से भेजी जा सकती हैं। इन्टरनेट के द्वारा चाहे ई–मेल, फेसबुक, इन्टरनेट फोन, वीडियो–कान्फ्रेंसिंग द्वारा किसी भी जानकारी का आदान–प्रदान किया जा सकता हैं, हालाँकि इन सबके लिए उपभोक्ता के लिए इन्टरनेट कनेक्शन की उपलब्धता एवं लोग–इन (सवहपद) अनिवार्य हैं :

1 **ई–मेल इन्टरनेट** दुनिया का एक पुराना माध्यम है। ई–मेल द्वारा किसी भी जानकारी की गोपनीयता बनाते हुए किसी भी व्यक्ति–विशेष अथवा जन–समूह को पलक झपकते ही कोई भी जानकारी दी जा सकती हैं व ऐसी जानकारी को भविष्य में किसी सन्दर्भ में भी प्रयोग में लाया जा सकता हैं।वहीं किसी व्यक्ति के पते में एक छोटी व मामूली–सी गलती किसी भी जानकारी को गलत व्यक्ति के पास भेज सकती हैं।

ई–मेल द्वारा जानकारी प्राप्त करने के लिए पशु–पालक कभी भी जानकारी का लाभ उठा सकते हैं।

2.**फेसबुक व् वाट्सअप** आज के दौर के बहुत ही लोकप्रिय माध्यम हैं :

फेसबुक किसी भी जानकारी को पहुँचाने का एक बहुत ही आसान माध्यम हैं, फिर चाहे वो कोई फोटो हो या फिर लिखित जानकारी। फेसबुक पर बांटी गयी जानकारी सभी आम आदमी के लिए उपलब्ध होती हैं व किसी भी जानकारी को बड़ी आसानी से संग्रहित किया जा सकता हैं। युवाओं में इस तरह सन्देशों का आदान–प्रदान काफी लोकप्रिय है, हालाँकि नकली फेसबुक प्रोफाइल बना कर कोई भी आसानी से किसी भी व्यक्ति–विशेष अथवा जानकारी को भ्रमित कर सकता है।

वाट्सअप दुनिया में मुफ्त–सन्देश भेजने का एक बहुत ही लोकप्रिय जरिया है। फेसबुक की तरह इसमें किसी तरह का विज्ञापन प्रचार नहीं होता हैं। वाट्सअप में कोई भी एक समान रूचि अनुसार एक समूह बना सकता है, इस तरह के समूह में समान मानसिकता के लोग होने की वजह से जानकारी का आदान–प्रदान ज्यादा प्रभावकारी रूप में हो सकता हैं। किसी भी अनजान व्यक्ति के पास यदि किसी का वाट्सअप नंबर हैं तो वह उसका वाट्सअप प्रोफाइल देख सकता हैं। हालाँकि इसके लिए स्मार्ट फोन का होना जरुरी है।

3. **मोबाईल** फोन के जरिये कभी भी किसी से भी निजी स्तर पर संपर्क किया जा सकता है व ऊँट–पालकों को तुरंत अपने सवालों के अनुसार जानकारी मिल सकती हैं। इन्टरनेट फोन का प्रयोग करने के लिए इन्टरनेट कनेक्शन के अलावा अन्य कोई शुल्क भी नहीं लगता, हालाँकि साधारण फोन सेवा दूरी के हिसाब से महंगी भी हो सकती हैं। फोन के जरिये संपर्क सफल बनाने के लिए फोन करने वाले के अलावा फोन उठाने वाले की

अनिवार्यता भी आवश्यक हैं। फोन के सिग्नल का उपलब्ध होना भी जानकारी के आदान–प्रदान के लिए आवश्यक हैं। फोन द्वारा परोक्ष रूप में जानकारी देने के कारण वक्ता अपनी शारीरिक भाव–भंगिमाओं को जानकारी प्रसारित करने में लाभ नहीं उठा पाता हैं।

फोन द्वारा एस एम एस (SMS)के माध्यम से किसी को कभी भी बिना परेशान किये जानकारी दी जा सकती हैं। बहुत सारे शार्ट–टेक्स्ट संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग होने कि वजह से SMS निजी स्तर पर जानकारी देने के लिए उपयुक्त हैं हालाँकि लम्बे सन्देश भेजना असुविधाजनक हो सकता है।

4. फैक्स द्वारा किसी भी साधारण फोन का उपयोग करते हुए किसी भी जानकारी को बिना किसी विशेष रूप में बदले बिना ही जानकारी ऊँट–पालकों तक पहुंचाई जा सकती हैं। सन्देश प्राप्तकर्ता 24 घंटे में कभी भी फैक्स मशीन शुरू कर के किसी भी जानकारी की कागजी प्रति प्राप्त कर सकते हैं। फैक्स द्वारा प्राप्त की गई जानकारी की भौतिक अवस्था बहुत अच्छी नहीं होती हैं एवं यदि फैक्स मशीन के द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा फोन व्यस्त हो तो फैक्स भेजा नहीं जा सकता। यदि जानकारी–सामग्री ज्यादा हो तो फैक्स भेजने में बहुत ज्यादा समय भी लग सकता हैं।

इस प्रकार आधुनिक संसाधनों का उपयोग करके आप ऊँट–पालन अच्छी तरह से कर सकते हैं व अपनी आजीविका बढ़ा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

–: लेखक :–

श्याम सिंह दहिया, शरत चंद्र मेहता, शिरीष नारनवरे, राघवेन्द्र सिंह

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय ऊष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड., शिवबाड़ी, बीकानेर 334001 (राजस्थान)

दूरभाष : 0151–2230183, फैक्स : 0151–2970153